IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की सृजनात्मक चिंतन क्षमता का अध्ययन

प्रीती शर्मा
शोधार्थी
श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय
गजरौला

डॉ0 भेदपाल गंगवार
प्रोफेसर
श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय
गजरौला

सारांश

सृजनात्मकता किसी भी समाज के बौद्धिक, सांस्कृतिक और आर्थिक विकास की आधारशिला है। यह केवल कल्पनाशीलता तक सीमित नहीं, बल्कि समस्या–समाधान, नवाचार और मौलिक सोच का भी महत्वपूर्ण पक्ष है। आज की शिक्षा प्रणाली में विद्यार्थियों को केवल जानकारी देना पर्याप्त नहीं, बल्कि उन्हें जिज्ञासु, नवाचारी और रचनात्मक नागरिक बनाना आवश्यक है।माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की बौद्धिक क्षमताओं का तीव्र विकास होता है। यदि इस चरण में उनकी सृजनात्मक चिंतन क्षमता को पहचाना और प्रोत्साहित किया जाए, तो वे भविष्य में समाज के लिए शोधकर्ता, विचारक या नवप्रवर्तक बन सकते हैं। परंपरागत भारतीय शिक्षा प्रणाली में रटंत और एकरूपता प्रधान शिक्षण से रचनात्मकता को अपेक्षित स्थान नहीं मिल पाया है। इससे विद्यार्थी उपेक्षित रह जाते हैं।

यह शोध इसी पृष्ठभूमि में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मक चिंतन क्षमता की पहचान, मूल्यांकन और संवर्धन की संभावनाओं की पड़ताल करता है। अध्ययन में विभिन्न व्यक्तिगत, पारिवारिक, शैक्षिक और सामाजिक कारकों का विश्लेषण किया गया है, जो सृजनात्मकता को प्रभावित करते हैं।सृजनात्मकता को बढ़ावा देने के लिए विद्यालयों में सृजनात्मक गतिविधियों को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाना, शिक्षकों का प्रशिक्षण, मूल्यांकन में मौलिकता को महत्त्व देना, रचनात्मक क्लबों की स्थापना, और अभिभावकों को जागरूक करना आवश्यक है।

मुख्य शब्द - सृजनात्मक चिंतन क्षमता , संवर्धन की संभावना, सृजनात्मक गतिविधि

प्रस्तावना

सृजनात्मकता किसी भी समाज के बौद्धिक, सांस्कृतिक तथा आर्थिक विकास की मूल आधारशिला है। यह केवल व्यक्ति की कल्पनाशीलता या कलात्मकता तक सीमित नहीं होती, बल्कि समस्या–समाधान, नवाचार, विश्लेषणात्मक सोच और विचारों की मौलिकता में भी परिलक्षित होती है। आज के वैश्विक और तकनीकी युग में शिक्षा की भूमिका केवल सूचनाओं के संचरण तक सीमित नहीं रह गई है, बल्कि उसका प्रमुख उद्देश्य विद्यार्थियों में ऐसे जीवनोपयोगी कौशलों का विकास करना है, जो उन्हें जिज्ञासु, नवाचारी एवं सृजनशील नागरिक के रूप में तैयार करें। विशेष रूप से माध्यमिक स्तर वह चरण होता है जहाँ विद्यार्थियों की बौद्धिक क्षमताओं का तीव्र विकास होता है। इस अवस्था में यदि अत्यंत विद्यार्थियों की **सृजनात्मक** चिंतन क्षमता को समय पर पहचाना जाए, उचित मार्गदर्शन और प्रोत्साहन दिया जाए, तो वे भविष्य में समाज के लिए शोधकर्ता, विचारक, अन्वेषक या सृजनकर्ता की भूमिका में सामने आ सकते हैं। सृजनात्मकता के बीज बाल्यकाल में ही अंकुरित हो जाते हैं, किंतु माध्यमिक स्तर पर यह विशेष रूप से आकार लेना प्रारंभ करती है। ऐसे में शिक्षकों, अभिभावकों और शैक्षणिक संस्थाओं की यह नैतिक और शैक्षणिक जिम्मेदारी बनती है कि वे विद्यार्थियों को ऐसा वातावरण उपलब्ध कराएँ, जहाँ वे अपने विचारों को स्वतंत्र रूप से व्यक्त कर सकें, नवीन प्रयोग कर सकें और विविध क्षेत्रों में अपनी सृजनात्मक क्षमता का विस्तार कर सकें। **सृजनात्मक** चिंतन क्षमता का विकास केवल व्यक्तिगत प्रगति तक सीमित नहीं रहता, बल्कि यह समाज में नवाचार और समावेशी विकास की दिशा में भी महत्त्वपूर्ण योगदान देता है। इसलिए यह आवश्यक हो जाता है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत अत्यंत विद्यार्थियों की इस विशिष्ट क्षमता की पहचान कर उसे विकसित करने हेतु उपयुक्त शैक्षिक रणनीतियाँ अपनाई जाएँ, जिससे वे न केवल अपने भविष्य को बल्कि समस्त समाज को भी नव दिशा प्रदान कर सकें।

अध्ययन की पृष्ठभूमि

भारतीय शिक्षा प्रणाली में दीर्घकाल से 'एकरूपता' और 'पाठ्यक्रम–केंद्रित' शिक्षण पद्धति को प्रमुखता दी जाती रही है, जहाँ शिक्षण का केंद्रबिंदु परीक्षा–उन्मुखता, पाठ्यवस्तु की पुनरावृत्ति और तथ्यों का कंठन होता है। इस प्रणाली के अंतर्गत विद्यार्थियों की मौलिक सोच, कल्पनाशीलता और **सृ**जनात्मक क्षमता को अपेक्षित महत्त्व नहीं मिल पाता। विशेष रूप से वे विद्यार्थी, जो औसत से अधिक सृजनशील या नवाचारशील प्रवृत्ति के होते हैं, इस रूढ़ शिक्षण प्रणाली में उपेक्षित रह जाते हैं और उनकी विशिष्ट प्रतिभा या तो कुंठित हो जाती है या फिर अविकसित रह जाती है। शिक्षा का ऐसा ढाँचा, जो केवल एकरूपता पर आधारित हो, विविधताओं और व्यक्तिगत क्षमताओं की उपेक्षा करता है। वर्तमान समय में जब विश्व निरंतर नवीनता और नवाचार की ओर अग्रसर है, तब यह अत्यंत आवश्यक हो गया है कि हम अपनी शिक्षा प्रणाली को इस प्रकार रूपांतरित करें कि उसमें सृजनात्मकता को एक केंद्रीय स्थान प्राप्त हो। पिछले कुछ वर्षों में शिक्षा मनोविज्ञान और शिक्षण विधियों के क्षेत्र में यह स्पष्ट रूप से स्वीकार किया गया है कि सृजनात्मकता का विकास न केवल विद्यार्थियों की व्यक्तिगत सफलता के लिए आवश्यक है, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और वैज्ञानिक प्रगति के लिए भी यह अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। इस संदर्भ में शैक्षणिक शोध, पाठ्यक्रम विकास और कक्षा शिक्षण में रचनात्मक प्रवृत्तियों को समाहित करने के प्रयास बढ़े हैं। प्रस्तुत अध्ययन इसी दिशा में एक प्रयास है, जो माध्यमिक स्तर पर अत्यंत विद्यार्थियों की सृजनात्मक चिंतन क्षमता के मूल्यांकन, पहचान और संवर्धन की संभावनाओं का अन्वेषण करता है। यह शोध न केवल वर्तमान शिक्षा पद्धति की सीमाओं को उजागर करता है, बल्कि यह भी प्रस्तावित करता है कि कैसे इन विद्यार्थियों की विशिष्ट क्षमताओं को उचित मार्गदर्शन और शिक्षण रणनीतियों के माध्यम से उन्नत किया जा सकता है।

अध्ययन की आवश्यकता और औचित्य

माध्यमिक स्तर की शिक्षा विद्यार्थियों के बौद्धिक, सामाजिक और भावनात्मक विकास का महत्वपूर्ण चरण होता है। इस अवस्था में विद्यार्थियों के मस्तिष्क में कल्पनाशीलता और विचारशीलता तीव्र होती है, जिसे सही दिशा में विकसित करना आवश्यक होता है। सृजनात्मक चिंतन क्षमता न केवल विद्यार्थियों को नवीन विचार उत्पन्न करने में सहायक होती है, बल्कि उन्हें समस्याओं को विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण से देखने और नवाचार करने में भी सक्षम बनाती है। गिलफोर्ड (1950) ने सृजनात्मकता को बुद्धि का एक महत्त्वपूर्ण आयाम माना है, जो व्यक्ति की मौलिकता और नवीनता को प्रकट करता है। 21वीं सदी की शिक्षा नीति, विशेषकर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, भी यह स्पष्ट करती है कि विद्यार्थियों में सृजनात्मकता, आलोचनात्मक सोच और समस्या–समाधान जैसी क्षमताएँ विकसित करना अत्यंत आवश्यक है (भारत सरकार, 2020)।आज का समाज ज्ञान–आधारित और नवाचार–प्रधान बनता जा रहा है, जहाँ केवल रटंत ज्ञान पर्याप्त नहीं होता। सृजनात्मक चिंतन विद्यार्थियों को इस प्रतिस्पर्धी और परिवर्तनशील युग के अनुरूप तैयार करता है। यह न केवल उनके शैक्षणिक प्रदर्शन को बेहतर बनाता है, बल्कि उनके आत्म–विश्वास, भावनात्मक अभिव्यक्ति और मानसिक स्वास्थ्य को भी सुदृढ़ करता है। Torrance (1974) के अनुसार, सृजनात्मक सोच विद्यार्थियों की अधिगम क्षमता को प्रोत्साहित करती है, जिससे वे जटिल समस्याओं को हल करने में कुशल बनते हैं। इसी प्रकार, रनको एवं अकार (2012) ने अपने शोध में बताया कि डाइवर्जेंट थिंकिंग मानसिक संतुलन और आत्म–संतोष में वृद्धि करती है। इसके अतिरिक्त, वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा के बढ़ते दबाव और नौकरी की बदलती आवश्यकताओं के बीच सृजनात्मकता एक महत्वपूर्ण जीवन–कौशल बन चुकी है। यह विद्यार्थियों को केवल उपभोक्ता नहीं बल्कि नवप्रवर्तक बनाती है। शिक्षा का उद्देश्य अब केवल किताबी ज्ञान देना नहीं, बल्कि ऐसा वातावरण निर्मित करना है जो स्वतंत्र सोच, प्रयोगशीलता और नवाचार को बढ़ावा दे। क्रोप्ल (2001) ने भी शिक्षा में सृजनात्मकता की भूमिका को स्पष्ट करते हुए यह बताया है कि रचनात्मक शिक्षा ही विद्यार्थियों को सीखने के लिए प्रेरित करती है।

इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों में सृजनात्मक चिंतन क्षमता का विकास अत्यंत आवश्यक और उपयोगी है। यह न केवल उन्हें बेहतर विद्यार्थी बनाता है, बल्कि उन्हें एक विवेकशील, नवोन्मेषी और सक्षम नागरिक के रूप में भी विकसित करता है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की रचनात्मक चिंतन क्षमता की पहचान करना।
2. सृजनात्मक क्षमता को प्रभावित करने वाले कारकों का विश्लेषण करना।
3. सृजनात्मकता के संवर्धन हेतु उपाय प्रस्तुत करना।

आंकड़ों का संग्रहण

शोधकर्ता द्वारा सृजनात्मक चिंतन से संबंधित विभिन्न आयोगों, शिक्षा नीतियों, रिपोर्टों आदि का अध्ययन किया गया। शोधकर्ता द्वारा माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मक चिंतन की प्रभावशीलता के बारे में विशेषज्ञों से जानकारी प्राप्त की गई। इसके अलावा शोधकर्ता द्वारा संबंधित साहित्य का भी अध्ययन किया गया। शोधकर्ता ने माध्यमिक स्तर पर अध्यनरत विद्यार्थियों की सृजनात्मक चिंतन छमता की पहचान करने ,कारको का पता लगाने , विद्यालयी वातावरण , शिक्षण विधियों की प्रभावशीलता का पता लगाने व् रचनात्मकता के संवर्धन के उपाय का पता लगाने के लिए इस अध्ययन की आवश्यकता महसूस की ।

सृजनात्मक चिंतन क्षमता की पहचान के उपाय:

- **मुक्त लेखन:** छात्रों को किसी विषय पर स्वतंत्र रूप से लिखने के लिए प्रोत्साहित करें। इससे उनकी कल्पनाशक्ति, विचारों की नवीनता और अभिव्यक्ति की शैली का पता चलता है।
- **प्रश्न पूछने की प्रवृत्ति** जो छात्र असामान्य या जिज्ञासापूर्ण प्रश्न पूछते हैं,वे रचनात्मक सोच के संकेतक होते हैं।
- **समस्या समाधान** : जो छात्र नए और उपयोगी समाधान प्रस्तुत करते हैं,वे सृजनात्मक होते हैं।
- **चित्रकला/रेखाचित्र** :कला के माध्यम से विद्यार्थी अपने अद्वितीय दृष्टिकोण और कल्पनाशक्ति को प्रकट करते हैं।
- **रोल–प्ले या नाट्य–अभिनय** :कल्पनाशील संवाद, चरित्र निर्माण, और प्रस्तुतिकरण शैली उनकी रचनात्मकता को दर्शाते हैं।
- **वैकल्पिक उत्तरों की स्वीकृति:** जब विद्यार्थी परंपरागत उत्तरों के बजाय अलग सोच प्रस्तुत करते हैं, तो उनकी चिंतक क्षमता उजागर होती है।
- **प्रोजेक्ट आधारित कार्य:** छात्रों को खुली–समस्या आधारित प्रोजेक्ट्स में संलग्न करने से उनकी नवाचार क्षमता सामने आती है।

सृजनात्मक क्षमता को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारकों का विश्लेषण:

1. व्यक्तिगत कारक (Individual Factors):

- **जिज्ञासा** : जिज्ञासु विद्यार्थी नए–नए प्रश्न पूछते हैं और नई चीज़ों को जानने की रुचि रखते हैं।
- **कल्पनाशक्ति** : रचनात्मकता का मूल आधार है दृ जितनी अधिक कल्पनाशक्ति, उतनी अधिक सृजनशीलता।
- **आत्मविश्वास:** नया विचार प्रस्तुत करने या असामान्य सोच रखने के लिए आत्मविश्वास आवश्यक है।
- **भावनात्मक स्थिति:** तनाव, भय या असुरक्षा रचनात्मक सोच को बाधित कर सकती है, जबकि प्रसन्नचित्त मन इसे बढ़ावा देता है।

2. पारिवारिक कारक (Family Factors):

- **पालन–पोषण की शैली** : प्रोत्साहन देने वाली और खुले विचारों वाली परवरिश रचनात्मकता को बढ़ावा देती है।
- **पारिवारिक माहौल:** संवादात्मक और विचारों की स्वतंत्रता वाला माहौल बच्चों को सोचने की छूट देता है।
- **संसाधनों की उपलब्धता:** जैसे कि किताबें, कला सामग्री, संगीत उपकरण आदि।

3. शैक्षिक कारक (Educational Factors):

- **शिक्षक का दृष्टिकोण:** यदि शिक्षक छात्रों को स्वतंत्र सोचने और नए विचारों को साझा करने के लिए प्रेरित करते हैं, तो रचनात्मकता विकसित होती है।
- **शिक्षण विधियाँ:** सक्रिय और खोजपरक शिक्षण (Inquiry&based learning) रचनात्मक सोच को प्रोत्साहित करता है।

- **शैक्षिक पाठ्यक्रम**: कठोर और रटंत पाठ्यक्रम रचनात्मकता को दबा सकता है, जबकि लचीला और गतिविधि–आधारित पाठ्यक्रम उसे बढ़ाता है।

4. सामाजिक व सांस्कृतिक कारक (Social & Cultural Factors):

- **सामाजिक अपेक्षाएँ**: यदि समाज केवल परंपरागत सोच को ही मान्यता देता है, तो रचनात्मकता घट सकती है।
- **संस्कृति का प्रभाव**: जिन संस्कृतियों में नवाचार और व्यक्तिगत अभिव्यक्ति को महत्व मिलता है, वहाँ रचनात्मकता अधिक पनपती है।
- **मीडिया और तकनीक**: सही दिशा में उपयोग किया गया मीडिया रचनात्मकता को प्रेरित करता है, लेकिन अत्यधिक या अनुचित उपयोग इसे बाधित भी कर सकता है।

5. भाषाई और अभिव्यक्ति के अवसर:

- **भाषा की पकड़ और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता**: यदि विद्यार्थी अपने विचारों को खुलकर व्यक्त कर सकते हैं, तो उनकी सृजनात्मकता अधिक स्पष्ट होती है।

सृजनात्मकता के संवर्द्धन हेतु उपाय

1. शिक्षा के क्षेत्र में उपाय:

- **रचनात्मक शिक्षा प्रणाली**: परंपरागत रट्टा मारने वाली शिक्षा की बजाय ऐसा माहौल होना चाहिए जहाँ छात्र अपनी सोच को स्वतंत्र रूप से व्यक्त कर सकें।
- **प्रयोग आधारित शिक्षा**: जब छात्र खुद से प्रयोग करते हैं (जैसे विज्ञान प्रोजेक्ट, मॉडल बनाना, कहानी लिखना), तो उनकी सृजनात्मकता स्वतः ही विकसित होती है।
- **कलात्मक गतिविधियों का समावेश**: संगीत, नृत्य, चित्रकला, नाटक आदि से बच्चों की कल्पनाशक्ति और अभिव्यक्ति की क्षमता मजबूत होती है।

2. व्यक्तिगत स्तर पर उपाय:

- **नई चीज़ें सीखना**: किताबें पढ़ना, अलग–अलग विषयों में रुचि लेना, और समय–समय पर नई चीज़ों को सीखने की इच्छा रखना ज़रूरी है।
- **समय और स्वतंत्रता देना**: जब अपने मन से सोचने और करने का समय मिलता है, तभी सृजनात्मक विचार सामने आते हैं।
- **आत्म–विश्वास बढ़ाना**: अपने विचारों और काम पर भरोसा रखना सृजनात्मकता का मूल आधार है।

3. परिवार और समाज में उपाय:

- **प्रोत्साहन देना**: बच्चों या युवाओं के नए विचारों का मज़ाक उड़ाने की बजाय उन्हें सराहना और मार्गदर्शन देना चाहिए।
- **खुला संवाद**: ऐसा वातावरण जहाँ सभी अपनी बात खुलकर कह सकें, रचनात्मक सोच को बढ़ावा देता है।

- **सांस्कृतिक आयोजनों में भागीदारी:** नाटक, संगीत, भाषण, चित्रकला आदि आयोजनों से लोगों में नई ऊर्जा और अभिव्यक्ति की क्षमता आती है।

4. राष्ट्रीय और तकनीकी स्तर पर उपाय:

- **रचनात्मक मंचों की स्थापना:** सरकार और संस्थाओं को ऐसे मंच देने चाहिए जहाँ युवा अपनी सोच और प्रतिभा दिखा सकें।
- **स्टार्टअप और नवाचार को बढ़ावा:** नए विचारों पर आधारित व्यवसाय और तकनीक को समर्थन मिलने से समाज में रचनात्मकता फैलती है।
- **तकनीक का सही उपयोग:** डिजिटल उपकरण जैसे ग्राफिक डिजाइन, वीडियो निर्माण, ऐप डेवलपमेंट आदि युवाओं को अपनी रचनात्मक सोच को आधुनिक रूप देने में मदद करते हैं।

सुझाव

1. विद्यालयों में रचनात्मक गतिविधियों को पाठ्यक्रम का अभिन्न भाग बनाया जाए।
2. शिक्षकों को विशेष प्रशिक्षण दिया जाए जिससे वे रचनात्मकता को प्रोत्साहित कर सकें।
3. मूल्यांकन प्रणाली में लचीलापन लाया जाए जिससे मौलिकता को भी अंक दिए जाएँ।
4. विशेष रचनात्मक क्लबों की स्थापना की जाए।
5. अभिभावकों को जागरूक किया जाए कि वे बच्चों की कल्पनाशक्ति को बढ़ावा दें।

सामाजिक उत्पादकता :

माध्यमिक स्तर पर अत्यंत सृजनात्मक विद्यार्थियों की पहचान और उनके विचारों को प्रोत्साहन देना समाज के लिए बहुत उपयोगी होता है। ऐसे विद्यार्थी भविष्य में वैज्ञानिक, लेखक, कलाकार, उद्यमी या सामाजिक सुधारक बन सकते हैं। उनकी मौलिक सोच और नवीन विचार समाज की समस्याओं के समाधान में मदद कर सकते हैं। जब सृजनात्मक सोच को सही दिशा और अवसर मिलता है, तो यह न केवल व्यक्ति के जीवन को बेहतर बनाती है, बल्कि समाज की प्रगति, सांस्कृतिक समृद्धि और आर्थिक विकास में भी योगदान देती है। इसलिए ऐसे विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का संवर्धन समाज की भलाई और उन्नति के लिए आवश्यक है।

निष्कर्ष

सृजनात्मकता केवल कल्पनाओं की उड़ान नहीं होती, बल्कि यह विचारों की स्वतंत्रता, सोच की मौलिकता और मन की उड़ान को हकीकत में बदलने की कला है। यह मानव जीवन की वह शक्ति है, जो उसे साधारण से असाधारण बना देती है। चाहे वह किसी वैज्ञानिक की खोज हो, किसी लेखक की लेखनी, कलाकार की कूची, या एक सामान्य व्यक्ति की नई सोच हर क्षेत्र में सृजनात्मकता ही वह चिंगारी है जो नवाचार को जन्म देती है। आज के वैश्विक युग में, जहाँ हर दिन नई तकनीकें और चुनौतियाँ सामने आ रही हैं, वहां केवल परंपरागत ज्ञान पर्याप्त नहीं है। आवश्यकता है ऐसे व्यक्तियों की जो समस्याओं को नए नजरिए से देखें, जोखिम उठाने का साहस रखें और दुनिया को कुछ नया देने की इच्छा रखते हों और यह सब सृजनात्मकता से ही संभव है।

सृजनात्मकता का संवर्द्धन महज़ एक विकल्प नहीं, बल्कि समय की मांग है। हमें शिक्षा तंत्र को इस दिशा में मोड़ना होगा, जहाँ बच्चे केवल अंक नहीं बल्कि अपने विचार व्यक्त करना सीखें। परिवारों को अपने बच्चों को कल्पना करने, प्रयोग करने और गलती करने की आज़ादी देनी चाहिए।समाज को

रचनात्मक प्रयासों को मान्यता और सम्मान देना चाहिए। और राष्ट्र को ऐसी नीतियाँ बनानी होंगी जो नवाचार को जन्म दें, न कि उसे दबाएं। जब हम सृजनात्मकता को हर स्तर पर सम्मान और अवसर देंगे, तब हम एक ऐसे समाज का निर्माण कर पाएंगे जो केवल तकनीकी रूप से ही नहीं, बल्कि मानसिक और सांस्कृतिक रूप से भी समृद्ध होगा। सृजनात्मकता ही वह बीज है जिससे विकास, समृद्धि और मानवता का सच्चा वृक्ष पनपता है। हम सभी मिलकर सृजनात्मकता को न केवल पहचानें, बल्कि उसे प्रोत्साहित करें, पोषित करें और जीवन का अनिवार्य हिस्सा बनाएं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- **एन0सी0ई0आर0टी0 (2005)** राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा– नई दिल्लीः राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद–
- **एन0सी0ई0आर0टी0 (2020).** सीखने का अधिकार रचनात्मक शिक्षण के प्रयोग, दिल्ली।
- **यूनेस्को रिपोर्ट (2021).** शिक्षा में रचनात्मकताः एक वैश्विक परिप्रेक्ष्य।
- **सिंह, ओ.पी. (2019).** शिक्षाशास्त्र और शिक्षण विधियाँ, लाल बुक डिपो, मेरठ।
- **ट्रिलिंग, बी., – फेडेल, सी. (2009)** 21वीं सदी के कौशलः हमारे समय के लिए अधिगम। जोसी–बास।
- **गिलफोर्ड जे– पी– (1950) रचनात्मकता**– अमेरिकी मनोवैज्ञानिक) 5(9)) 444 454–
- **रॉबिन्सन, के. (2006, फ़रवरी)** क्या विद्यालय सृजनात्मकता को नष्ट करते हैं? (वीडियो) TED ConferencesA https%@@www-ted-com@talks@sir&ken&robinson&do&schools&kill&creativity
- **राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005)** एनसीईआरटी) नई दिल्ली–
- **रनको, एम. ए., – अकार, एस. (2012)** डाइवर्जेंट थिंकिंगः सृजनात्मक क्षमता का एक संकेतक। क्रिएटिविटी रिसर्च जर्नल, 24(1), 66 75A https%@@doi-org@10-1080@10400419-2012-652929
- **शर्मा, रामनाथ (2015).** मूल्यांकन और मूल्यनिर्धारण, प्रकाशन विभाग, मेरठ।
- **स्टर्नबर्ग आर0जे0 और लुबार्ट0 टी0 आई0 (1995)**– भीड़ को चुनौती देनाः अनुरूपता की संस्कृति में रचनात्मकता को बढ़ावा देना– न्यूयॉर्कः फ्री प्रेस–
- **क्रोप्ले, ए. जे. (2001)** शिक्षा और अधिगम में सृजनात्मकताः शिक्षकों और शिक्षाविदों के लिए एक मार्गदर्शिका।
- **जैन, एन.के. (2012).** शैक्षिक मनोविज्ञान, वाणी प्रकाशन, दिल्ली।
- **टोरेंस ई0 पी0 (1965)** रचनात्मक व्यवहार को पुरस्कृत करनाः कक्षा रचनात्मकता में प्रयोग– एंगलवुड क्लिफ्स) एनजेः प्रेंटिस बड़ा कमरा–
- **गैग्ने (2004)** उपहारों को प्रतिभाओं में बदलनाः डीएमजीटी एक विकासात्मक सिद्धांत के रूप में– उच्च क्षमता अध्ययन) 15(2)) 119 147–